शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2016

कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित कुंठित पात्र

दत्तात्रय दशरथ पटेल (शोधार्थी)
प्रा.डॉ.संजयकुमार शर्मा (शोध निर्देशक)
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय
जलगांव, महाराष्ट्र, भारत

शोध saसंक्षेप

साठोत्तरी हिंदी साहित्य में कमलेश्वर के उपन्यास बहुत ही चर्चित रहे हैं। कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों के माध्यम से 'आम आदमी' का जीवन चित्रित किया है। कमलेश्वर ने अपने जीवन काल में 16 उपन्यासों की रचना की, जो समाज, देश, संसार के किसी न किसी पहलु को अभिव्यक्त करते है। आधुनिक जीवन भूमंडलीकरण की वजह से मनुष्य जीवन में किस तरह बदलाव आता जा रहा है। मनुष्य अप नी रोजी, रोटी और मकान के लिए किस प्रकार संघर्ष कर रहा है। संघर्ष करते वक्त उसके जीवन में शंकाएं, समस्याएं, अनिष्ठा, कुंठाओं का जन्म भी हो जाता है। वह कुंठाग्रस्त होकर अपना जीवन जीता है। जिससे उसका विकास नहीं हो पाता। इसीलिए कुंठाग्रस्त व्यक्ति समाज, देश के लिए कभी भी फायदेमंद नहीं हो सकता है। उसके माध्यम से समाज का अहित ही होगा। वह परिवार की जिम्मेदारियों को भी सही तरीके से नहीं निभा सकता। कमलेश्वर के कुंठाग्रस्त पात्र आधुनिक मनुष्य के लेखा-जोखे को प्रस्तुत करते हुए दिखायी देते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है

कमलेश्वर के उपन्यासों में कुंठा के विविध आयाम

डॉ.रेखा शर्मा कुंठा के बारे में कहती हैं कि , व्यक्ति की इच्छा पूर्ति में प्रकृति या व्यक्ति द्वारा बाधा पँहुचने पर कुंठा का निर्माण होता हैं। कुंठा अधिकतर सु शिक्षित व्यक्तियों में होती है। व्यक्ति की सफलता में रोडे अटकाने का कार्य , शारीरिक दोष जैसे कुरुपता , दुर्बलता या व्यक्तिगत दोष जैसे कु शलता की कमी, संकटों का मुकाबला करने की अक्षमता कुंठा पैदा करते हैं।"1 कुंठा से व्यक्ति अपने जीवन का अंत करना चाहता है, इसीलिए कुंठा ही आत्महत्या को जन्म देती हैं।

कमलेश्वर के 'एक सडक सत्तावन गलियां' इस उपन्यास में बंसिरी कुंठाग्रस्त पात्र है। वह नायक सरनाम को लेकर कुंठित है। बंसिरी सरनाम को पाना चाहती है। शारीरिक और मानसिक दोनों ही रूपों से। लेकिन सरनाम उसे नहीं मिलता और उसकी कामेच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती, तब वह कुंठाग्रस्त हो जाती है। सरनाम शरीर से बलिष्ठ है, वह शारीरिक सुख उसी से पाना चाहती है। लेकिन उसकी उम्र से ज्यादा अधेड आयुवाला रंगीले से उसका विवाह हो जाता है। वह खरीद लेता है। यहाँ पर बंसिरी की काम भावना का दमन हो जाता है। इसीलिए कामेच्छा को लेकर सरनाम के प्रति कुंठित हो जाती है। उसे हमे शा सरनाम का चौड़ा सीना और बलवान शरीर की याद आती है। वह सरनाम को पाने के लिए बैचेन हो जाती है। बंसिरी कहती है , "बलिष्ठ सरनाम, पत्थर की लाट की तरह खडा होता है।"2

कमलेश्वर के 'तीसरा आदमी' उपन्यास में सुमंत कुंठित पात्र है। उसका मन कुंठाग्रस्त होकर

आत्महत्या कर लेता है। नरे श का सुमंत पर संदेह करना असहाय हो जाता है और सुमंत को नरेश की शंका, संदेह आत्महत्या करने पर मजबूर कर देता है। नरे श के अचेतन मन में यह बात बैठ जाती है कि सुमंत और उसकी पत्नी चित्रा इन दोनों का अवैध संबंध है। नरेश भी इस शंका की वजह से कुंठित है। लेकिन अपने स्वयं के अहम की वजह से संदेह को व्यक्त नहीं करता। लेकिन एक दिन नरेश सुमंत को स्पष्ट शब्दों में कहता है, "देखो सुमंत मुझे नसीहत देने की कोशिश मत करो और फिर तुम।.....तुम्हे शरम आनी चाहिए थी वह सब करते हुए.....तुम मेरे भाई थे.....अगर चित्रा में कोई कमजोरी पैदा हो गई थी तो तुम्हें उसका नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए था। तुमने मेरा विश्वास तोडा है.....मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि , तुम मेरे लिए आस्तीन के सांप साबित होगे।"3 इसीलिए सुमंत का अचेतन मन कुंठित होकर आत्महत्या करने का फैसला ले लेता है। सुमंत अपने भीतर की कुंठा को आत्महत्या का रूप देकर यह साबित कर देता है कि , उसने नरे श का विश्वास नहीं तोडा है, न हो उसने चित्रा की दुर्बलता का गलत फायदा उठाया है। उपन्यास के तीनों पात्र-नरे श, चित्रा और सुमंत में कुंठा है। लेकिन तीनों की वजह अलग है। चित्रा और नरे श अपने आर्थिक संघर्षों और कामेच्छा की अतृप्ति के वजह से कुंठित हैं। "नरेश की कुंठा चेतन स्तर पर भी दिखती है। उसमें कुंठा का प्रबल वेग है। वह अपनी संदेह रूपी कुंठा को चित्रा पर व्यक्त कर देता है। लेकिन चित्रा तटस्थ होकर अपने अहम को तोड़े बिना इसका जबाब दे देती है। सुमंत के पास जबाब के रुप में केवल आत्महत्या रह जाती है।"4 एक संदेह की वजह से तीनों का जीवन नष्ट हो जाता है।

कमलेश्वर के 'डाक बँगला ' उपन्यास में 'इरा' कुंठित पात्र है। वह अपने अकेलेपन से कुंठित हैं। वह पुरुषों के प्रति आकर्षित है। वह पुरुषों से प्यार, प्रेम करना चाहती है। कोई भी पुरुष हो उससे वह नफरत नहीं करती। वह उसके जीवन में आये पाँचों पुरुषों को स्वयं को समर्पित कर देती है। फिर भी उसकी कामेच्छा अतृप्त रहती हैं। तभी उसके मन में कुंठा का जन्म होता है। वह सही अवस्था को स्वीकार नहीं कर पाती है और इन्हीं विरोधाभासों की स्थिति में उसको मिलता है, सिर्फ एकाकीपन। इसी एकाकीपन से उसके भीतर कुंठा की भावना जन्म लेती है। इरा कुंठित हो कर कहती है, "अल्पसंख्याक जाति की तरह मेरी द शा.....कब कौन क्या कर बैठेगा , यह भय मुझे हमे शा सताता रह ता था। चारों ओर कुंठित और प्यासे लोग घूमते थे। मुझे ऐसा कोई भी नहीं मिला जो आधे घंटे बैठकर सीधी तरह बात कर पाया हो।"5 इरा अपनी ही निर्माण की गयी स्थितियों से कुंठित है। जीवन में असुरक्षा की भावना और अकेलेपन का आभास भी उसके भीतर कुंठा उत्पन्न करता है। इसीलिए वह किसी एक पुरुष की नहीं हो पाती है।

कमलेश्वर के 'समुद्र में खोया हुआ आदमी ' उपन्यास में श्यामलाल कुंठित पात्र हैं। श्यामलाल अपनी पारिवारिक समस्याओं को लेकर कुंठित हैं। उसकी दो लडकियां और एक लडका है। लेकिन तारा की नौकरी को लेकर उनके मन में कुंठा प्रबल हो जाती हैं। वह लड़कियों के नौकरी करने के खिलाफ थे। लेकिन तारा फिर भी नौकरी करती है। परिवार का आर्थिक संघर्ष से जूझना और संस्कारों एवं परम्पराओं का टूटना। वह विरोधाभास की परिस्थितियाँ श्यामलाल के भीतर कुंठा पैदा करती है। वह जीवन से त्रस्त और निराश हो जाता है। श्यामलाल कहते हैं कि, "मैं

सब समझता हूँ। ये लडकियां मुझे चलाती हैं। अब आए वह हरबंस के घर में...।"6 श्यामलाल आगे सोचते हैं, "हजारों...लाखों...करोडों की आबादी में वे बिलकुल तन्हा और फालतू हो गए हैं...किसी को उनकी जरुरत नहीं...कोई ऐसा नहीं जो उसकी सुने। "7 श्यामलाल पारिवारिक समस्याओं की वजह से कुंठित हो गये हैं और अपने को अकेला महसूस करने लगते हैं।

कमलेश्वर के 'काली आंधी ' उपन्यास में जग्गीबाबु कुंठित पात्र हैं। जग्गीबाबु अपनी पत्नी मालती की सफलता और अपने प्रति मालती की उपेक्षा को लेकर कुंठित हैं। जग्गीबाबु मालती के सामने समझौता करना नहीं चाहते , दूसरी ओर मालती की आव श्यकताओं का ध्यान भी रखते हैं। अपने ही द्वारा उपस्थिति की गई परिस्थितियों से उनमें कुंठा पैदा हो जाती है। इसीलिए जग्गीबाबु होटल की मैनेजरी से रिजाइन दे कर चले जाते हैं। वे कहते हैं , "कोई रास्ता पलटता नहीं मालती...रास्ते तो अपनी राह चले जाते हैं...आदमी पलट जाता है...लेकिन मैं अब आदमी कहाँ रह गया हूँ...मैं अब सिर्फ एक रास्ता रह गया हूँ...वह भी केवल लिली के लिए। उसे अभी मेरी जरुरत है। जब उसे भी जरुरत नहीं रहेगी तो रास्तों की तरह ही मैं अपनी राह चला जाऊंगा।"8 इसीलिए जग्गीबाबु मालती जी से अलग होकर या मालती के जीवन से दूर चले जाना चाहते हैं, ताकि उनकी कुंठा से उन्हें मुक्ति मिल पाये। इसीलिए अपनी बेटी लिली को लेकर वह कही दूर चले जाते हैं।

कमलेश्वर के 'आगामी अतीत ' उपन्यास में 'कमलबोस' कुंठित पात्र हैं। कमलबोस अपने ही वर्ग से, समूह से अलग होकर और सफलता के पीछे भागकर पश्चात्ताप की आग में जलते रहते हैं। कमलबोस अपनी सफलता पर खुश होते हैं, तो दूसरी ओर उन्हें अपने गाँव, चंदा और अपने वर्ग से अलग होने का दुःख है। इस स्वीकार और अस्वीकार की भावना से कमलबोस कुंठाग्रस्त हो जाते हैं। चंदा के प्रेम तथा जज्बातों के साथ उन्होंने जो अन्याय किया , उसे वह चाहकर भी अपने अतीत को भुला नहीं पाते। लेकिन पच्चीस सालों बाद उसे चंदा की याद आती है। लेकिन उन्हें केवल कुंठा और पश्चात्ताप ही प्राप्त होता है। कमलबोस अपने अतीत की कुंठा से छुटकारा पाने के लिए चंदा की बेटी चांदनी को अपनाकर कुंठा से मुक्ति पाना चाहता हैं। लेकिन चांदनी वैश्या बन जाने की वजह से कमलबोस के साथ नहीं रह पाती और वह कमलबोस को अपनी माँ चंदा की मौत का गुनहगार मानती है। इसीलिए संपूर्ण उपन्यास में कमलबोस के पश्चात्ताप, द्वंद्व और कुंठा दृष्टिगोचर होती है।

कमलेश्वर के 'वही बात ' उपन्यास में समीरा कुंठित पात्र है। समीरा अपने अकेलेपन से कुंठित है। वह अपने पति प्रशांत से अलग होकर नकुल के साथ विवाह करने का निश्चय करती है। लेकिन जो कमियां प्रशांत में थी, वही आगे नकुल में पाकर कुंठित हो जाती है। इसीलिए विवाह के बाद वह विरोधाभास की स्थिति में ही रहती है। जहां पर केवल रह जाता है पश्चात्ताप, पछतावा, द्वंद्व और कुंठा। समीरा सोचती है कि नकुल से विवाह करके और प्र शांत को ठुकराकर ठीक नहीं किया। इसी सही गलत की भावना में वह तीव्र कुंठा की शिकार हो जाती है। वह नकुल से कहती है कि, "और औरत बहुत छोटी-छोटी बातों , छोटे-छोट सुखों के लिए आदमी के साथ जीती हैं। "9 अतः प्रशांत के समझाने के पश्चात ही उसकी कुंठा का निवारण होता है और वह नकुल के साथ वैवाहिक जीवन ठीक से जी पाती है।

कमलेश्वर के 'सुबह.दोपहर शाम' इस उपन्यास में बडी दादी कुंठाग्रस्त पात्र हैं। वह अंग्रेजों के प्रति कुंठित हैं , क्योंकि उनके पति को अंग्रेजों के सैनिकों ने गोली मार दी थी। लेकिन मारने के बाद भी उनकी लाष नहीं मिल पायी थी। तभी से अंग्रेजों के प्रति उनका मन कुंठित हो गया था। उनके घराने में कोई भी अगर अंग्रेजों की गुलामी करता है तो बडी दादी उन्हें खूब सुनाती है। वे कहती है कि, "देख जसवंत! रोटी तो कुत्ता भी खाता है, जो टुकडा फेंक दो उसे ही खा लेता है , पर मानुष रोटी-रोटी में भेद करता हैं, तू रोटी का भेद भूल गया है।...जैसे तेरी बुआ भूल गई है।...वह अपने आदमी के साथ अंग्रेज बहादुर की रोटी तोडने लगी।"10 लेकिन अम्मा के जज्बातों को समझने वाला कोई नहीं होता। इसीलिए बडी दादी कुंठित होकर घर छोडकर जंगल में चली जाती हैं। बडी दादी के मन में अपने बेटे, पोते के लिए भी कुंठा हो जाती है। इसीलिए मरते वक्त अपनी पोती के हाथों से ही तुलसीदल और गंगाजल अपने मुंह में डालने को कहती हैं।

कमलेश्वर के 'रेगिस्तान' उपन्यास में वि श्वनाथ कुंठित पात्र है। वि श्वनाथ सब कुछ छोडकर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए दे शभर का भ्रमण करता है। यहाँ तक कि उसका शादी करने का विचार भी नहीं होता। गांधी जी के बताये हुए रास्ते पर चलने वाला वि श्वनाथ जीवन के आधे रास्ते पर आकर कुंठित हो जाता हैं। वो जहां हिंदी मंदिर खुलवाता है, वहाँ हिंदी पढने के लिए कोई नहीं आता। हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य में इतना मग्न हो जाता है कि अपने पिता को मरते वक्त मुखाग्नि देने तक नहीं जा पाता। लेकिन वह जमाने के बदल जाने से कुंठित हो जाता है। "उसी दिन से पुरी बस्ती में बात होने लगी थी कि, हिंदी मंदिर वाल विश्वनाथ न हिंदी बोलता है, न उर्दू, वह सिर्फ अंग्रेजी बोलता है , कोई सलाम करे तो गुडबाई बोलता है , कोई नमस्ते करे तो गुडमार्निंग-गुड ईवनिंग बोलता हैं। "11 इस प्रकार विश्वनाथ कुंठित होकर हिंदी मंदिर में ही भूखा-प्यासा चार दिनों तक पडा रहता है और लोगों को बेहोशी की हालत में मिलता है।

कमलेश्वर के 'पति पत्नी और वह ' उपन्यास में शारदा कुंठित पात्र है। वह अपने पति के दूसरे प्रेम प्रकरणों की वजह से कुंठित हो जाती है। इसीलिए वह घर छोडकर जाना भी चाहती है , लेकिन अपने बेटे की वजह से नहीं जा पाती। वह अपने पति से बातचीत करना बंद कर देती है। रंजीत एक दो बार उसकी पत्नी शारदा को रंगे हाथों पकडता है। लेकिन रंजीत सुधरने के बजाय और उलटे अपने दफ्तर की सेंक्रेटरीओं को फंसाने में लग जाता है। इसी वजह से शारदा कुंठित है। शारदा रंजीत से कहती है , "और रंजीत तुमने मुझे धोखा क्यों दिया ? मेरे साथ वि श्वासघात क्यों किया ? क्या मैंने अपना सब कुछ तुम्हें नहीं दिया था रंजीत ?"12 शारदा अपने कुंठित जीवन को उभारने के लिए और रंजीत को सुधारने के लिए एक नाटक खेलती है, जिसमें वह उसके भाई का सहारा लेती है। और रंजीत का दोस्त दुरानी की भी मदद लेती है। रंजीत को सही रास्ते पर लगाकर या उसकी गलतियों का एहसास कराकर शारदा कुंठा से मुक्ति पाती है। और कहती है , "क्योंकि तुम खुद को मर्द होने के अंहकार के कारण तानाशाह समझने लगे थे। तुम्हारे सामने औरत की न तो कोई इज्जत रही थी न अधिकार। मेरा ख्याल है कि, आज की इस घटना के बाद तुम इस सच्चाई को कभी नहीं भूलोगे कि औरत भी एक व्यक्ति होती है। उसे खिलौना मत समझो। उसके महत्व को स्वीकार करो और उसके अधिकारों का सम्मान करो।"13

निष्कर्ष

कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में पात्रों की मनोदशा का वर्णन कुंठा के माध्यम से किया है। कुंठा से मनुष्य की अवस्था क्या हो सकती है , इसकी ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। आज के आधुनिक, भूमंडलीकरण, जागतिकीकरण के युग में इंसान कदम-कदम पर कुंठित हो सकता है या हो रहा है। उससे उसका पारिवारिक जीवन ध्वस्त हो रहा है। न ही वह समाज के लिए कुछ कर पा रहा है। इसीलिए कुंठित व्यक्ति समाज के नुकसान दायक है। इसीलिए कुंठा को अपने मन में जगह देनी नहीं चाहिए। कमले श्वर ने अपने कुंठित पात्रों की मनोदशा का जीवंत चित्रण किया है। उनके पात्र हमारे आसपास के जीवन में मिल जाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 कमले श्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान , डॉ. .रेखा शर्मा, पृष्ठ क्र.127, प्र.संस्करण 1991, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद

2 समग्र उपन्यास-एक सडक सत्तावन गलियां, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.49, सं.2011, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली

3 समग्र उपन्यास-तीसरा आदमी , कमले श्वर, पृष्ठ क्र.198,

4 कमलेश्वर के उपन्यासों में मनोविज्ञान , डॉ..रेखा शर्मा, पृष्ठ क्र.129,

5 समग्र उपन्यास , डाक बँगला- कमले श्वर, पृष्ठ क्र.279,

6 समग्र उपन्यास-समुद्र में खोया हुआ आदमी , कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.296,

7 वही, पृष्ठ क्र. 331

8 समग्र उपन्यास-काली आंधी, कमले श्वर, पृष्ठ क्र.414,

9 समग्र उपन्यास, वही बात, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.552,

10 समग्र उपन्यास , सुबह.दोपहर शा म, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.578,

11 समग्र उपन्यास , रेगिस्तान, कमले श्वर, पृष्ठ क्र.711,

12 पति पत्नी और वह , कमले श्वर, पृष्ठ क्र. 117, प्र.सं.2010, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

13 वही, पृष्ठ क्र.235